समकालीन कविता में दलित चेतना

BABITHA A U

ASSISTANT PROFESSOR IN HINDI

SADANAM KUMARAN COLLEGE PATHIRIPALA

Abstract:-

हिन्दू समाज व्यवस्था के अंतर्गत परपरागत रुप से निम्न यानि कि शूद्र मानी जानेवाली जातियों के लिए दलित शब्द का प्रयोग होता है। हज़ारों वर्षों तक अस्पृश्य या अछूत समझी जानेवाली उन सभी शोषित जातियों के लिए सामूहिक रूप से प्रयुक्त होता है। पहले दलितों की स्थिति बहुत कठिन है, दलितों को अस्पृश्य मानकर उन्हें समाज और धर्म से बहिष्कृत किया गया है। सार्वजनिक सड़कों पर चलने का अधिकार, सही ढंग से वस्त्र धारण करने का अधिकार, बाज़ार मण्डी में सामान बेचने खरीदने का अधिकार , विद्योपार्जन अधिकार से वंचित रखा गया। दलितों की विषमता देखकर अनेक अधिकारों को पुनःस्थापित करने की लड़ाई एक आंदोलन का रूप धारण कर चुका था। भारत में दलित उन्नति एवं विकास के लिए अनेक प्रकार की आंदोलन चला है। अधिकारों से वंचित दलित शोषित, उपेक्षित लोगों में चेतना जागृत करना इन महान व्यक्तियों का लक्ष्य रहा है। दलित चेतना का मूल स्वर स्वतंत्रता है। सवर्ण- अवर्ण ऊँच- नीच का यह संघर्ष जहाँ से प्रारंभ होता है वही से दलित चेतना का जन्म होता है। दलित चेतना स्वानुभूति का चेतना है। भारतीय समाज साहित्य और संस्कृति में दलित विचारधारा एक सशक्त सामाजिक आन्दोलन के रूप में उभर कर आ रही है। दलित साहित्य के उद्भव और विकास के पीछे पीड़ा, घृणा, संघर्ष, आक्रोश, विद्रोह और क्रांति का इतिहास है। गैर दलित साहित्य से सशक्त रचना दलित द्वारा लिखी गई दलित साहित्य है। क्योंकि इसमें उनके अनुभव है। दलित कवि का मन जाति के प्रति नकार और विद्रोह से भरा है। इसलिए उनकी दर्द अपनी कविताओं में अभिव्यक्त हुआ है। ओमप्रकाश वाल्मीकि, मोहनदास नैमिशराय, जयप्रकाश कर्दम, सूशीला टाकभौरे आदि दलित साहित्यकारों की कविताओं में यह महसूस करती है।

संकेत शब्दः-

दलित चेतना, आन्दोलन, दलित साहित्य

भूमिका

जिसका दलन और दमन हूआ उसे दलित कहते हैं। दलितों की स्थिति बहुत कठिन है। ये लोग सभी अधिकारों से वंचित है। इस लोगों की विषमता को देखकर इन अधिकारों को पुनः स्थापित करने के लिए अनेक महान व्यक्तियों ने आगे आया। इनमें डॉ. भीमराव अंबेडकर, महात्मा गांधी आदि प्रमुख है। अधिकारों से वंचित दलित शोषित ,उपेक्षित लोगों में चेतना जागृत करना इन महान व्यक्तियों का लक्ष्य रहा है। दलित चेतना का मूल स्वर स्वतंत्रता है। सवर्ण-अवर्ण ऊँच -नीच का संघर्ष जहाँ से प्रारंभ होता है वही से दलित चेतना का जन्म होता है। दलित चेतना स्वानुभूति की चेतना है। दलितों के अनुभव और कठिनाइयों को दुसरों तक पहूँचाने के लिए दलित साहित्य का विकास हुआ। साहित्य समाज का एक दर्पण है।समाज की विभिन्न समस्याओं का प्रतिबिंब वह यथातथ्य रूप से प्रकट करता है उसका समाधान भी पेश करता है। आज का दौर परिवर्तन का दौर है। भारतीय समाज साहित्य

और संस्कृति में दलित विचारधारा एक सशक्त सामाजिक आन्दोलन के रूप में उभर कर आ रही है। दलित साहित्य के उद्भव और विकास के पीछे पीड़ा, घृणा, संघर्ष, आक्रोश, विद्रोह और क्रांति का इतिहास है।सदियों से पीड़ित समाज पर जो अन्याय और अत्याचार किये जाते रहे हैं, उसका विरोध दलित जीवन का चित्रण करनेवाला साहित्य ही दलित साहित्य है। दलित साहित्य के दो भेद किये जा सकते हैं कि एक जो स्वयं दलित है और दलितों के लिए लिखता है, दुसरा जो जन्मना दलित नहीं है। पर अपनी मानवीय संवेदना और कल्पना के विस्तार से दलितों के लिए लिखता है, इसे हम गैर दलित भी कहता है। गैर दलित साहित्य से सशक्त रचना दलित द्वारा लिखी गई दलित साहित्य है। क्योंकि इसमें उनके अनुभव है। दलित कवि का मन जाति के प्रति नकार और विद्रोह से भरा है।इसलिए उनकी दर्द अपनी कविताओं में अभिव्यक्त हुआ है।

दलित साहित्य का केंद्र बिंदु मानव है। मानवता का उत्थान ही दलित साहित्य का प्रयोजन है। दलित साहित्य वर्ण-व्यवस्था का घोर विरोधी है। दलित साहित्य मनुष्य की ,समता और बंधुत्व की भावना को सर्वोपरि मानता है। यह मानवधिकार की बातों को उठाता है, इसके साथ समाज में होने वाले बुराइयों को समाप्त करने का प्रयास करता है।

दलित साहित्य में अनेक विधाओं को देखने को मिलते हैं। जैसे कविता, कहानी, उपन्यास, नाटक, निबंध और आत्मकथा। इस सभी विधाओं से एक सशक्त विधा कविता है। कविता मूलतः युग संदर्भ की देन होती है। उसमें अतीत के चित्रण और भविष्य के संकेत भी युग संदर्भ से जुड़कर ही आते हैं। हिन्दी में दलित जीवन से जुड़ी रचनाओं की शुरुआत कबीर, रैदास, निराला, प्रेमचंद जैसे रचनाकारों से होती है। लेकिन 1914 में सरस्वती पत्रिका में छपी हीरा डोम की भोजपुरी कविता हिन्दी की पहली दलित कविता मानते हैं। इस कविता में दलितों की स्थिति का चित्रण है।आगे अनेक दलित साहित्यकारों ने अपने दर्द और पीड़ाओं की व्यक्त करते हुए रचनाओं रची हुई। इसमें प्रमुख है- ओमप्रकाश वाल्मीकि, मोहनदास नैमिशराय, जयप्रकाश कर्दम, सूरजपाल चौहान, सूशीला टाकभौरे, डॉ. कँवल भारती आदि □

वर्तमान में दलित साहित्य के प्रतिनिधि रचनाकारों में से एक है ओमप्रकाश वाल्मीकि। हिन्दी में दलित साहित्य के विकास में ओमप्रकाश वाल्मीकि की महत्वपूर्ण भूमिका है। ओमप्रकाश जी की कविताओं में जातिय अपमान और उत्पीड़न का जीवन वर्णन किया है। □ सदियों का संताप□ नामक कविता संग्रह में दलित चेतना की कविताएँ पूर्ण रूप से देखने को मिलती है। इस संकलन की पहली कविता है 'ठाकुर का कुआँ'□ इसमें वाल्मीकि जी ने सवाल उठाकर सवर्ण चेतना को झकझोर दिया।

हिन्दी दलित साहित्कारों में आनेवाले जयप्रकाश कर्दम एक नए-भाव बोध के कवि है। जिसमें एक ओर सामाजिक विसंगतियों के प्रति आक्रोश की आग है तो दुसरी और मानवीय संवेदनाओं का शीतल प्रवाह है। उनकी प्रसिद्ध कविता संग्रह है □गूंगा नहीं था में, तिनका तिनका आग, बस्तियों से बाहर।□ गूँगा नहीं था में कविता संग्रह की कविताएँ अस्वीकार एवं प्रतिरोध की कविताएँ है। तिनका तिनका आग उनका महत्वपूर्ण कविता संग्रह है। इसमें आनेवाली कविताएँ उत्पीड़न और यातना से मुक्त होकर जीवन के गीत गाने की आकांक्षा है। बस्तियों से बाहर नामक कविता संग्रह में आनेवाली कविताएँ सरल भाषा से. लिखा है। उनकी रचनाओं में दलित जीवन का यथार्थ चित्रण देखने को मिलता है।

मोहनदास नैमिशराय द्वारा लिखी गई. एक कविता संग्रह है 'आग और आन्दोलन'। इस कविता संग्रह की कविताएँ ज्यादातर अत्याचार के खिलाफ और दलितों के अधिकारों के प्रति आवाज़ उठानेवाली है। 'हथियार' नामक कविता में जाति के नाम पर दलितों में होनेवाले अत्याचार को रोकने का ताकत देख सकता हिन्दी दलित साहित्य के अंतर्गत आनेवाले रचनाकार है मलखान सिंह। उनकी कविताएँ दलित विमर्श के सिद्धांतों से जन्म लेती है।'सुनो ब्राह्मण 'और 'ज्वालामुखी के मुहाने' कविता संग्रह है।उनकी कविता आत्म संघर्ष और जीवन संघर्ष के बीच दोलायमान रहती है। एकलव्य ,शम्बूक जैसी मिथक दलितों के लिए एक शक्ति के रूप में प्रतीक बन जाते हैं।1994 में प्रयास प्रकशित हुआ है, इसमें पच्चीस कविता के माध्यम से दलित लोगों का आक्रोश ,दमन,तिरस्कार आदि को व्यक्त किया है। 'प्रयास' सूरजपाल चौहान द्वारा लिखी गई कविता है। 2004 में 'क्यों विश्वास करूँ' प्रकाशित हुआ। इसमें दलितों के दमन,उपेक्षा आदि को व्यक्त किया है।दलित साहित्यकारों में दलित कवयित्री भी आते हैं। डॉ.सुशीला टाकभौरे दलित साहित्य के महिला रचनाकारों में महत्वपूर्ण स्थान है। स्वाति बून्द और खारे मोती कविता संग्रह है। हमारे हिस्से का सूरज कविता में शोषण, अन्याय के विरुद्ध विद्रोह और दुशमनों ललकारते की चेतना देख सकती है।

इस प्रकार समकालीन कवियों ने किसानों, मज़दूरों, विधवा एवं आर्थिक रूप से विभिन्न लोगों की दुर्दशा की ओर ध्यान आकृष्ट करने के साथ पुरानी रुढियों जाति बन्धनों सामाजिक कुरीतियों शोषण आदि का पुरजोर विरोध अपने रचना के माध्यम से लिखा है।

निष्कर्ष

दलित साहित्य के उद्भव और विकास के पीछे पीड़ा, घृणा, संघर्ष, आक्रोश, विद्रोह और क्रांति का इतिहास है। दलित साहित्य में दलित कविता महत्वपूर्ण विधा है। समकालीन दलित कविताएँ दलित लोगों को जागृत करने का प्रयास कर रही हैं। दलित कवि का कर्तव्य यह है कि शोषित दलित समाज में चेतना जागृत कर उनके अधिकार व कर्तव्य के प्रति सचेत करना। दलित कविताएँ केवल वेदना, अपमान, अन्याय आदि के सिर्फ ब्यौरे प्रस्तुत नहीं करती, बल्कि क्रांति का नया संदेश देनेवाली और अंधकार से प्रकाश की ओर ले जानेवाली एक प्रखर विचारधारा की काव्यात्मक बुलंद अभिव्यक्ति है।

संदर्भ ग्रन्द

- दलित साहित्य का सौंदर्य शास्त्र – ओमप्रकाश वाल्मीकि
- समकालीन कविता में भूमिका- डॉ. विश्वभरनाद
- समकालीन कविता में वैजारिक आयाम- डॉ. बलदेव वंशी
- हिन्दी दलित साहित्य का विकास- डॉ.प्रमोद कोवप्रत